मनोज
चित्र
कथा
राम - रहीम
और भयानक
शैतान
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम

राम-रहीम और भयानक शैतान

डबल सीक्रेट एजेन्ट
00½
राम - रहीम

लेखक : बिमल चटर्जी || चित्रांकन : , त्रिशूल कॉमिको आर्ट

एक रात जब राम- रहीम अपने-अपने बिस्तरों पर गहरी नींद सोये हुए थे तो अचानक रहीम का शरीर छटपटाने लगा।

फिर वह भयानक ढंग से चीखता हुआ उठ बैठा।

गुर्र... र्र... र्र...!
रहीम, मेरे भाई, क्या हुआ तुम्हें ?
तभी—
धड़ाक!
उफ!
मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूंगा सुअर।
यह तुम क्या बक रहे हो ? कहीं तुम्हारे सर पर कोई भूत तो सवार नहीं हो गया है।
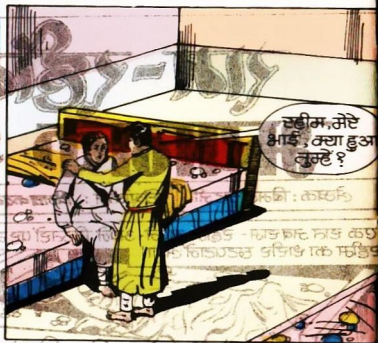
ही-ही-ही! गुर्ड... ई...ई!
तुम ठीक कह रहे हो, मैं भूत ही हूं। कालरा का भूत। ही-ही-ही!
हैं! कालरा का भूत!
हां, मैं इस समय तुम्हारे मुंहबोले भाई के भीतर कालरा का भूत ही बोल रहा हूं।
लेकिन मैं तो तुम्हें जानता नहीं।
भूल गये शैतान छोकरे, तुमने मुझे रामगढ़ की पहाड़ियों से गिराकर मारा था। जब मैं मिलिट्री के सीक्रेट पेपर पड़ोसी मुल्क के हाथों बेचने जा रहा था।
ओह! तो यह तुम हो। अब मैं तुम्हारी आवाज़ भी पहचान रहा हूं...

...लेकिन तुम रहीम के शरीर में क्यों प्रवेश कर गये और मुझसे क्या चाहते हो?
मैं तुमसे अपनी मौत का बदला लेना चाहता हूं। और मैं बदला लेकर ही रहूंगा।
सुनो मिस्टर कालरा! अब भी मैं तुम्हें यह नेक सलाह दूंगा कि तुम रहीम का शरीर छोड़ दो और चुपचाप अपने भूत लोक में चले जाओ, वरना...।
वरना क्या कर लेगा मूर्ख! देख, मैं तेरी हड्डियों का अभी चूरा बना देता हूं।
उफ!
आह! रहीम में तो गजब की शक्ति आ गई है। और मैं पूरी कोशिश करने के बावजूद इसके बंधनों से मुक्त नहीं हो पा रहा हूं। क्या करूं!
Oooo

ही-ही-ही! हो गई ना सारी ताकत बेकार।
यदि मैंने इसे मारने की कोशिश की तो कालसा के भूत का तो कुछ नहीं बिगड़ेगा। उल्टा रहीम को ही चोट लगेगी।
तभी रहीम ने राम को हवा में उछाल दिया।
आह! लगता है, अब हाथ-पैर या सिर अवश्य टूटेंगे।
धड़ाक!
हाय! गया काम से।
हा-हा-हा! बहुत सख्त हड्डी के बने हो। इसलिए अभी भी जान बाकी है।
हफ्फ! हफ्फ! ओफ! ज़रा भी दिमाग काम नहीं कर रहा है और सारे शरीर में चीटियां-सी रेंग रही हैं। हफ्फ! हफ्त!

ठाक!
उफ!
रहीम, होश में आओ! मैं तुम्हारा भाई राम हूं! इस दुष्ट शैतान कालश की आत्मा को अपने शरीर से बाहर निकालो!
हा-हा-हा! जब तक मैं ना चाहूं, मुझे कोई रहीम के शरीर से बाहर नहीं निकाल सकता...
...और मैं इसके शरीर से तभी बाहर निकलूंगा, जब तुम्हारे प्राण तुम्हारे शरीर से निकल जायेंगे।
छोड़ो मुझे! गड़प-गड़प!

राम-रहीम और भयानक शैतान

शीघ्र ही राम बेहोश होकर रहीम के हाथों में झूल गया।
ही-ही-ही! अब भी सांसें चल रही हैं। खैर, अभी इन्हें बन्द किये देता हूं।

और हो सकता था रहीम राम के प्राण ही ले लेता कि तभी उसके इर्द-गिर्द नीले रंग का धुआं तेजी के साथ उठने लगा।
ओह! यह क्या?

राम - रहीम को छोड़कर यहां से चले जाओ कालरा, वरना तुम्हारा अंजाम बहुत बुरा होगा।
लेकिन तुम कौन हो?
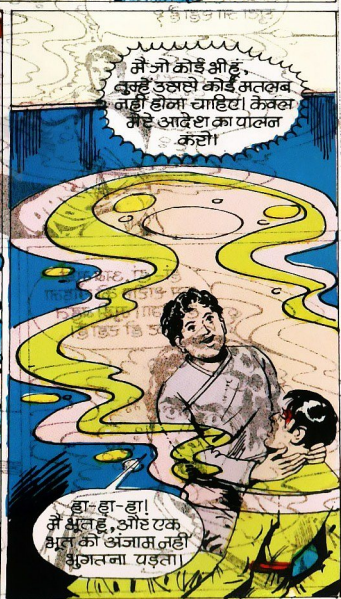
मैं जो कोई भी हूं, तुम्हें उससे कोई मतलब नहीं होना चाहिए। केवल मेरे आदेश का पालन करो।
हा-हा-हा! मैं भूत हूं, और एक भूत को अंजाम नहीं भुगतना पड़ता।

मैं कहता हूं, जल्दी करो, वरना तुम्हारे इर्द-गिर्द फैलने वाला धुआं तुम्हें भूत लोक में नहीं जाने देगा।
तुम मुझे कोरी धमकी दे रहे हो। मैं... तु... आह! नहीं...
...उफ! यह मुझे क्या हो रहा है? मेरा दम क्यों घुटा जा रहा है?
हा-हा-हा! अब तुम खुद ही रहीम को छोड़कर भागोगे।
हां-हां, अब मुझे इस शरीर को छोड़ना ही होगा। मुझे बहुत कष्ट हो रहा है।
मैं जा रहा हूं अजनबी दुश्मन। लेकिन याद रखना, तुम राम को मेरे हाथों मरने से नहीं बचा पाओगे।

कालदश की आत्मा के बाहर निकलते ही रहीम भी बेहोश होकर फर्श पर गिर पड़ा।
तभी वहां एक आंख का शैतान प्रकट हुआ, यानी कलियुग का भगवान फोमांचू।
दोनों बेहोश हैं। इन्हें होश में लाना होगा।
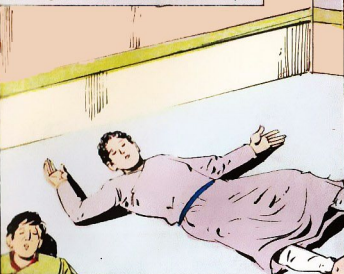
फोमांचू ने पहले उन दोनों को बारी-बारी उनके बिस्तर पर लिटाया, फिर जेब से एक शीशी निकालकर बारी-बारी से उन्हें सुंघादी।

शीघ्र ही दोनों उस शीशी में भरी गंध से होश में आकर उठ बैठे।
चचा!
तुम...!

अब तुम दोनों के क्या हाल-चाल हैं मेरे प्यारे भतीजो।
मैं तो ठीक हूं, ल... लेकिन रहीम...।
रहीम, तुम ठीक तो हो ना?
हां, मैं तो ठीक हूं। क्या हुआ था मुझे...
... अरे, यह तुम्हारे सिर से खून कैसे निकल रहा है राम भइया!
भतीजे, गनीमत समझो कि राम के सिर से खून ही निकल रहा है। यदि मैं वक्त पर नहीं पहुंच जाता तो आज तुम्हारे हाथों राम का दम ही निकल जाता और तुम जेल में पड़े सड़ रहे होते।
क्याSSS?

राम भइया, यह काना चाचा क्या कह रहा है? क्या सचमुच ऐसा कुछ हुआ है?
हां!
फिर राम ने रहीम को सारी बात बता दी।

मैं तुम्हारा शुक्रगुजार हूं फोमांचू कि तुमने ऐन मौके पर आकर मेरी जान बचा ली, लेकिन तुम अचानक यहां कैसे आ गये?

मैं आजकल भूत-प्रेतों व चुड़ैलों पर रिसर्च कर रहा हूं। आज जब मैंने एक प्रेत को अपने विशेष प्लेनाचिट पर बुलाया...

...तो उससे मुझे मालूम हुआ कि कालरा की भटकती आत्मा आज रात तुमसे बदला लेने वाली है। बस, मैं अपने भतीजों को बचाने के लिए यहां आ पहुंचा।

लेकिन फोमांचू, तुम्हें हमें बचाने की क्या जरूरत थी। हम तो तुम्हारे जानी दुश्मन हैं। मर जाने देते हमें।
ही-ही-ही! भतीजो! तुम मेरे शिकार हो। और एक अच्छा शिकारी अपने शिकार का किसी दूसरे के हाथों मरना कभी पसन्द नहीं करता...

रहीम की बात सुनकर फोमांचू की इकलौती आंख लाल बल्ब के समान जलने-बुझने लगी।

फिर हो सकता था फोमांचू रहीम को उसकी गुस्ताखी की कोई कठोर सजा दे देता कि तभी—

शायद बाहर तुम्हारी मम्मी हैं। इसलिए मैं चलता हूं। लेकिन रहीम, तुम ध्यान रखना। मैं हर बात बर्दाश्त कर सकता हूं, लेकिन गुस्ताखी नहीं। अच्छा. कुछ समय के लिए विदा।

कहने के साथ ही...

...फोमांचू का शरीर धूमिल पड़ने लगा...

...और फिर देखते ही देखते वहां से ओझल हो गया।

रहीम ने जाकर दरवाजा खोल दिया।
क्या हुआ बेटे? तुम्हारे कमरे से उठा-पटक की आवाजें कैसी आ रही थीं?
राम भइया गिर पड़े थे आंटी! शायद उसी की आवाज आपको सुनाई दी होगी।
अरे, तुम्हारे सिर से तो बहुत खून बह रहा है राम! आखिर तुम गिरे कैसे?
मैं बिना बत्ती जलाए टॉयलेट जा रहा था कि मेज से पैर टकरा गया और मैं गिर पड़ा और थोड़ी-सी चोट लग गई।
तुम इसे थोड़ी-सी चोट कह रहे हो। मुझे डर है कि कहीं तुम्हें टांके न लगवाने पड़ जायें।
ओहो मम्मी, तुम तो नाहक ही घबरा रही हो। रहीम अभी मेरी मरहम-पट्टी कर देगा। तुम जाकर आराम करो।
राम ने समझा-बुझाकर राधादेवी को वहां से भेज दिया...

...उसके बाद रहीम अलमारी से फर्स्ट-एड बॉक्स निकालकर राम की मरहमपट्टी करने में जुट गया।
राम भइया! कालरा की रूह ने जब मेरे द्वारा तुम्हारी जान लेने की कोशिश की है तो वह दुबारा भी ऐसी हिम्मत कर सकता है।
तुम ठीक कहते हो, लेकिन मेरे लिये मुश्किल यह है...
...कि उस शैतान ने मुझसे बदला लेने के लिये तुम्हें माध्यम बनाया है, वरना मैं इतनी जल्दी उससे हार मानने वाला नहीं था...
...खैर, कल सुबह हम प्रोफेसर दिवाकर से मिलेंगे। वे जरूर हमें कालरा की आत्मा से निपटने का कोई उपाय बता देंगे...
...चलो, अब तुम आराम से सो जाओ मेरे विचार से आज दुबारा कालरा की आत्मा तुम्हारे भीतर नहीं आयेगी।
खुदा करे ऐसा ही हो, वरना यदि मेरे द्वारा तुम्हें कुछ हो गया तो मैं जीवनभर अपने आपको माफ नहीं कर पाऊंगा।
कहकर रहीम ने लाइट का स्विच ऑफ किया और अपने बिस्तर पर जाकर सो गया। शीघ्र ही दोनों को गहरी नींद ने आ दबोचा।

अगले दिन सुबह नाश्ते आदि से निपटकर राम-रहीम प्रोफेसर दिवाकर के घर पहुंचे और उन्हें सारी बात बताई।
ऐसा होना कोई महान आश्चर्य की बात नहीं है राम बेटे! कई आत्माएं बड़ी कठोर होती हैं और वे तब तक इस सांसारिक दुनिया से नहीं जातीं, जब तक कि उनकी अन्तिम इच्छा पूरी नहीं हो जाती...
... खैर, तुम मुझे कालरा के बारे में बताओ, ताकि मैं उसके चरित्र के बारे में विस्तृत रूप से जानकर तुम्हें उसकी आत्मा से निपटने का कोई उपाय बता सकूं।
तो सुनिए, मैं आपको शुरू से बताता हूं!
कहकर...
... राम ने बताना आरम्भ किया —
एक दिन चीफ अंकल मुखर्जी ने रहीम को और मुझे बुलाकर बताया कि गृह मंत्रालय से रक्षा सम्बन्धी एक महत्त्वपूर्ण फाइल गायब हो गई है ...

... सरकार को भय है कि यदि वह फाइल हमारे किसी दुश्मन देश के हाथ लग गई तो हमारे देश की सुरक्षा को बहुत बड़ा खतरा पहुंच सकता है। इस तरह उन्होंने उस फाइल को खोजने की जिम्मेदारी हम पर डाल दी। हम तुरन्त उस केस पर काम करने लगे...
इस समय हम कहां चल रहे हैं राम भइया?
गृह मंत्रालय। हम वहां मालूम करेंगे कि फाइल की सुरक्षा की जिम्मेदारी किसकी थी और उसने अपनी जिम्मेदारी का पालन क्यों नहीं किया?
लेकिन इस बात की जांच-पड़ताल तो क्राइम ब्रांच पहले ही कर चुकी है और चीफ के कहे मुताबिक उस दिन वहां का वरिष्ठ अधिकारी छुट्टी पर था।
लेकिन सवाल यह पैदा होता है कि वह अधिकारी उसी दिन छुट्टी पर क्यों था?
...मेरे दिमाग में जो प्रश्न था, उसके अनुसार मैंने गृह मंत्रालय पहुंचकर उसकी खोजबीन की...
आई एम फ्रॉम डबल सीक्रेट सर्विस, यह रहा मेरा परिचय पत्र।
ओह!

कहो, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं।
मैं उस काली फाइल के बारे में जानना चाहता हूं, जो कुछ दिन पहले आपकी अनुपस्थिति में आपके स्ट्रांगरूम से चोरी हुई थी।
???
लेकिन उसके बारे में मैं अपना बयान क्राइम ब्रांच के अधिकारियों को पहले ही दे चुका हूं।
मैं जानता हूं, लेकिन मैं आपका बयान एक बार फिर आपके मुख से सुनना चाहता हूं।
!!!
सॉरी, मेरे पास बार-बार बयान देने का समय नहीं है।
...वह अधिकारी काफी देर तक मुझे टालता रहा। तब मैंने अंधेरे में एक तीर छोड़ा...
सुनिये मिस्टर सक्सेना, मैं जान चुका हूं कि वह फाइल स्ट्रांग रूम से आपकी अनुपस्थिति में गायब नहीं हुई है...
!!!

...बल्कि एक दिन पहले ही आपने स्वयं उस फाइल की चोरी की है...
...और यह काम आपको एक जबरदस्त दबाव में आकर करना पड़ा है...
???
...मैं तो अब आपसे केवल यह जानना चाहता हूं कि आप पर फाइल को चोरी करने के लिए किस प्रकार का दबाव डाला गया था...
!!!
...और वह फाइल आपने किसको दी है।
???
म...मैं... नहीं... नहीं... गड़प...गड़प...।

...अंधेरे में छोड़ा गया तीर बिल्कुल फिट बैठा...
देखिए मिस्टर सक्सेना, यदि आपने मुझे सबकुछ सच-सच बता दिया तो मैं आपसे वायदा करता हूं कि यह राज केवल हम दोनों तक ही सीमित रहेगा।
यस मिस्टर सक्सेना! आप सच-सच बता दीजिए। निश्चिन्त रहिए, हमारे रहते आपका बाल भी बांका नहीं होगा।
...आखिर वह टूट ही गया...
हां, वह फाइल मैंने ही चोरी की थी और वह फाइल मैंने एक बहुत खतरनाक अपराधी कालरा को दी है...
...लेकिन इसमें मेरी मजबूरी थी। यह गद्दारी मुझे अपने देश से इसलिए करनी पड़ी, क्योंकि उस शैतान कालरा ने मेरी इकलौती युवा बेटी का अपहरण कर लिया था...

...और मुझे धमकी दी थी कि यदि मैंने ब्लैक फाइल उसके हवाले नहीं की तो वह और उसके तमाम साथी मेरी बेटी की इज्जत लूट लेंगे।
ओह! कालरा इस समय कहां मिलेगा?
इस समय वह कहां मिलेगा, यह तो मुझे नहीं मालूम। लेकिन वह कल टीकमगढ़ की पहाड़ियों पर दुश्मन देश के किसी बड़े अफसर से उस फाइल का सौदा करने के लिए अवश्य जायेगा।
धन्यवाद मिस्टर सक्सेना! चलो रहीम।
...मैंने उसी रात टीकमगढ़ की पहाड़ी को सीक्रेट सर्विस के आदमियों से घिरवा दिया...
ध्यान रहे, जब तक मेरी ओर से कोई सिगनल न मिले, आप लोगों को हरकत में नहीं आना है।
ठीक है मिस्टर राम! हम आपके संकेत का इन्तजार करेंगे।
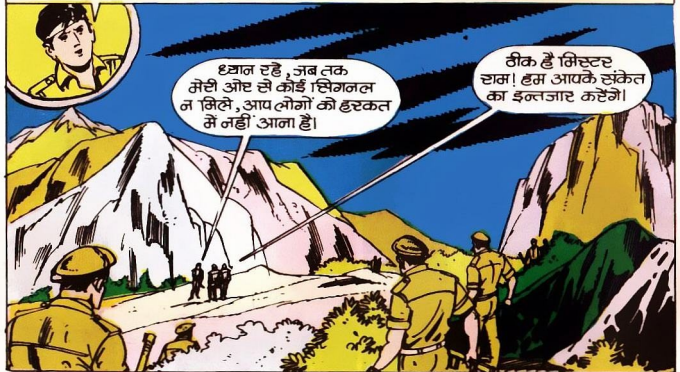
... जल्दी ही हैलीकॉप्टर नीचे उतर आया और उसमें से चार व्यक्ति नीचे उतरे। मैं उन्हें पहचानता था। वे हमारे पड़ोसी देश के मिलिट्री ऑफिसर थे...

हैलो मिस्टर कालरा! क्या हमारा काम हुआ?

बिल्कुल हुआ। फाइल इस बैग में है...

...लेकिन यह बैग मैं तभी तुम्हारे हवाले करूंगा, जब तुम मेरी मुंहमांगी रकम मेरे हवाले करोगे।
तुम्हारी मुंहमांगी रकम इस बैग में है...

...लो देखो, पूरे पांच करोड़ हैं।

अब हमें देर नहीं करनी चाहिए। तुम हवाई फायर करके जवानों को सिगनल दो, मैं इन्हें घेरता हूं।
ठीक है।

...रहीम ने हवाई फायर किया...
धड़ाम!

थूं...थूं...थूं...!

बस-बस, हमारे देश के दुश्मनों, अब तुम्हारा खेल खत्म हुआ।
कौन हो तुम छोकरे?
यदि मेरी नजरें धोखा नहीं खा रहीं तो यह राम है। तुम्हारे देश का खतरनाक जासूस छोकरा।
क्या कहा, राम...?
तुमने ठीक पहचाना शैतान के बच्चे! मैं राम ही हूं। अब तुम लोगों की भलाई इसी में है कि तुम सब अपने बैग समेत स्वयं को मेरे हवाले कर दो, वरना...।
...लेकिन राम की बात अधूरी रह गई...
धांय...!
उफ!

बेटा, मेरा नाम भी कालरा है। इतनी जल्दी में किसी के काबू में नहीं आता। अब अपना अंजाम देखो।
...लेकिन इससे पहले कि कालरा मुझ पर गोली चला पाता...
धांय...!
आह...!
तुम लोग चारों ओर से घिर चुके हो कालरा! इसलिए आत्म-समर्पण कर देने में ही तुम लोगों की भलाई है।
ओह!
तुम ठीक तो हो ना राम भइया!
हां, लेकिन यदि तुमने गोली चलाने में देर कर दी होती तो यह दुष्ट कालरा मुझे जरूर यमपुरी पहुंचा चुका होता।

मेजर, गिरफ्तार कर लीजिए इन सबको। अब इनकी जिंदगी और मौत का फैसला हमारे देश का कानून करेगा।
...दुश्मन देश के चारों मिलिट्री ऑफिसरों को गिरफ्तार कर लिया गया। कालरा और उनके बैग भी फाइल और रुपये समेत हमने कब्जे में ले लिये थे, लेकिन तभी मौका पाकर कालरा भाग निकला...
अरे, वह भाग रहा है। पकड़ो उसे।
भागकर जायेगा कहां। ऐसे शैतानों का तो मैं जन्मजात दुश्मन हूं।

...शीघ्र ही मैंने उसे पा लिया...
धड़ाक्!
हाय!

ढिशुम्!
उफ!
तड़ाक्!
आह!

... संयोग से मैं उसे मारता-मारता एक पहाड़ी के आन्तिम सिरे पर ले गया था...
शैतान के बच्चे, मैं तेरी वो दुर्गति करूंगा कि तू जीवनभर याद रखेगा।
धड़ाक्!
ओह! नहीं!

आ... ई... ई... बचाओ...!
ओह! नहीं!
...और...
आ... ई... ई... ई...!
...हम दौड़कर पहाड़ी से नीचे पहुंचे। वहां कालरा खून से सना आन्तिम सांसें ले रहा था...
मैं तुमसे बदला लूंगा राम, वरना मेरी आत्मा को कभी शांति नहीं मिलेगी। बेशक मैं मौत के निकट हूं राम! लेकिन याद रखना, तुमसे बदला लेने के लिए मेरी आत्मा हमेशा तुम्हारे इर्द-गिर्द मंडराती रहेगी...

...और जिस दिन मुझे मौका मिल गया, वह दिन तुम्हारी जिंदगी का... अंतिम... दिन... हो... गा।
...इस तरह एक भयानक चैलेंज देकर उसने दम तोड़ दिया था...
...लेकिन मैंने उसके उस चैलेंज को कभी गंभीरता से नहीं लिया था। और अब तक तो मैं कालरा की मौत को भुला ही बैठा था...
...लेकिन कल रात जो कुछ हुआ, उसने मुझे बहुत कुछ सोचने पर विवश कर दिया है अंकल!
तुम्हारा सोचना अपनी जगह ठीक है राम! कालरा की मजबूत इच्छा शक्ति अब भी उसकी आत्मा को तुमसे बदला लेने के लिए भटकने पर मजबूर कर रही है...

...अतः उसकी आत्मा फिर किसी रूपमें तुम पर हमला कर सकती है, इसलिए अब तुम्हें हर वक्त सावधान रहना होगा।
यह ठीक है अंकल, लेकिन आप कोई ऐसा उपाय तो बताइये, ताकि मैं हमला होने पर उसका सामना कर सकूं।
तुम दोनों कल किसी समय मेरे पास आना। मैं तुम्हें ऐसा तावीज बनाकर दूंगा, जिसके धारण करने पर कालरा की आत्मा आसानी से तुम्हारे पास आने की हिम्मत नहीं करेगी।
ठीक है। तब हम कल सुबह आयेंगे। अब हमें इजाजत दीजिए।
जाओ, लेकिन मेरी एक बात और ध्यान रखना। यदि इस बीच तुम पर कालरा की आत्मा फिर किसी रूप में हमला करे तो तुम किसी धार्मिक स्थान की शरण लेने की कोशिश करना...
...क्योंकि धार्मिक स्थान जैसे मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर में कोई शैतानी आत्मा प्रवेश करने में असमर्थ होती है।
ठीक है अंकल! मैं ध्यान रखूंगा।

- उस रात रहीम ने क्या किया? क्या रहीम के हाथों राम बच पाया?
- कालरू ने राम से कैसे बदला लिया?
- प्रोफेसर दिवाकर ने राम-रहीम को बचाने के लिए क्या उपाय किया?
- उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए मनोज कॉमिक्स के इसी सैट में पढ़ें–